

कोवलजहांजिनविंतिष्ठताहोइतहांनहोइ तीस्योथेआस्योदिशानेंसुंइशकारजि।
 नयंवस्थापि पूजाकरियज्ञकीविधियेकरै योनुपायकालासुरवतायो तदियांयो
 हीनुपायकीयो करिविद्याधरंकोअधिषागकुमारदेवांनैलेयज्ञविघ्नकरिवानेंआ
 यो सोजिनविंनैदेधिवा।ऊनिजायनारदनैकहतीरूवो जोजहांजिनेश्वरदेवकीप्र
 तिमांहोइ तहांहारीविद्याकोवसायनही तीस्योआपणेंस्थानकजांऊंछू याकहि।
 करिनिजनुवनगयो तेंगायाछेपरवतकृतयज्ञनिरविघ्नरूवो कालपायविश्वभूति
 पईतभरिकरिसातवैंनरकिगया तेतीससागरपर्यंतमहादुखकलेसभोगदेवान
 कोकादुखकोवर्षनकहांतककहिजे जिनआगमयकीजांणिलेणें अथानंतर
 महाकालासुरसगरविश्वभूतादिकसमईआपणंशत्रुवर्गनैइति नरकमेंबोलिए
 याषोलिनिजदेवरूपधरितोकांप्रतिकहतोरूवो कूपईभवविषैमध्यंगनना
 मयोदनापुरकौरजाछो सोमैयापीसुलसाकेनिमतिदांतकरिमहापापनुपार
 ज्यो तीस्योअवधेहिंसामार्गछोदि अहिंसालक्षणजिएप्रणीतधर्मअंगीका
 रकरै जोसुखचाहैछेनोहिंसामतिकरैईनांतिकहिकरिअदृश्यरूवो पाछेद
 यावंतहोयआपणीदृष्टचेष्टकीवहोननिंदागरहाकरिप्रायश्चित्तलीयो जिहिक

सौकहेवसुस्वर्गगयो॥ केतायककहेनरकगयो॥ ईशांतिविमंवाटमांनलोकांसहि
ताविश्वभूतिप्रयागजाइकरिशजसीयज्ञकीविधिकरतोद्भवो॥ महापुष्पकाराजा
नेत्रादिदेजेधर्मात्माछात्पांयहोतनिंद्यो॥ तवनीविश्वभूतिकेजिनधर्मकीप्रती
तिनआर्शअरकेताइकजेमलाप्राणीछा॥ तेऊमारगछोदिभगवंतप्रणीतशुचा
मारगविषेप्रवर्त्मानरदजीधर्मकीमर्यादासषी॥ सोईवातकरिजेवमागजाजि
नधर्मीछा॥ तेवहोतहरषितद्भवो॥ नारदजीकीप्रससाकरिगिरितटनामनग
रकोराजदीयो॥ अथानंतरनारदजीएकदिनदिनकरदेवनांमविद्याधरनेक
ही॥ होमित्रजिहितिहिंउपायकरितुपर्वतकृतअमागनैनिवारि॥ तववैकही॥
ष्योहीकरिस्मो॥ नारदनेईशांतिकहिकरिविद्याकीसमर्थतासोनागऊमारदेवो
नेंबुलाया॥ महाकालासुरकोअर्यवर्तनकोसर्वप्रपंचकह्यो॥ तवनागऊमारदे
वांजायसंगामविषेमहाकालासुरनेप्रगाययज्ञविघ्नकीयो॥ तवविश्वभूतिअ
र्यवर्तनप्रस्था॥ सरणटूटताफिरैछातवहीमहाकालासुरनेअंगैतिष्ठतोदेख्यो॥
सर्ववृतांतवैनेकह्यो॥ तववैकही॥ महाकादेवीएनागऊमारछो॥ स्पांयोउपद्रव
कीयोछे॥ सोअवधेएकअपायकरो॥ विद्यानुवाटप्रवर्धविषेकहीछे॥ नागविद्याता

आकासविषैतिष्टतादेवविद्याधरकहताह्वा॥ अहोवसुनरेंद्रमहाबुद्धिवांनञ्चै
 सौधर्मविध्वंसनमागर्तमतिप्रसूयो॥ योवचनकहताहीधारीद्वयादशाकुर्द्रएव
 नदेवविद्याधरकहताह्वा॥ सिंहासनेनैह्वा वसुअर्यर्षतम्लानमुखह्वा॥ त
 र्द्रान्तिदेबिमहाकासासुरकाकिंकरतापसकौरूपधरिकहताह्वा देवसु
 राजनहेपृथ्वीभयमतिकरै॥ अंसौकहिकरिमायासौराजनेनगर्भकुं चौकीयो॥
 तववसुमूरिषकहंतौरुवो॥ हंतत्वकौकेताछो॥ काईडर्योछो॥ पृथ्वीतकोवचनसत्य
 गाणे॥ तवकंठपर्यंतन्मिमैह्मो॥ असीदशादेबिभ्रतापुरिषकहताह्वा॥ हेभूप
 तिईमिथ्यावादकरिधारीयाअवस्थाकुर्द्रतीसोअवनीमिथ्यामारगनेंनजि॥ जि
 नधर्मकोअंगीकारकरि॥ इमांतिमाधकपुण्यांप्रार्थनाकरी॥ तोनीमूर्खयज्ञहीनेंधा
 र्मवतावतौरुवो॥ तवसमस्तदेहन्मिमैह्मविगर्दशैधधनस्योमूवो॥ सानेवेंनरा
 किगयो॥ तवकालासुरलीकनेंप्रनीतिउपजावानिमित्तगगनविषैविमाणमैवेग
 ॥ सरारअरवसुदोन्योमायाकरिदिषाया॥ सोकहताह्वा॥ ह्येयज्ञकीप्रधाकरि
 स्वर्गलोकविषैउपजा॥ सुखभोगवांछा॥ तीस्योभारदकावचनमांनियज्ञधर्म
 मोमति॥ पृथ्वीतकावचनसत्यछै॥ इमांति कहिअहृत्प्रह्मवो॥ अवकेतायकलो

छे ह्मांको संसय हरि करे ॥ नारद तो निश्चय करि अहिंसा ही नै धर्म स्खै ॥ अरप
 द्धित हिंसा धर्म निरूप्यै ॥ सो यां दोषां मैसां चोऊण सो थो कहौ ॥ तव वसुपापी अर
 क्षीर के दूध अथायक को उपदेश दयास्तु पछो ॥ तिहु नै जां एतौ थो भो ॥ पर्वत क
 माता की प्रार्थना का वशायकी ॥ नरक जां एतौ हार तिहु थकी ॥ कलिकाल का निक
 छि आवाथकी ॥ हिंसानंद रौ प्रध्वां न विधे तत्पर रूपो ॥ अधर्म भी पद्धत का वचन नै
 सत्पक हतौ रूपो ॥ अरक ही प्रत्यक्ष वस्तु विधे संदेह का ॥ पद्धत तो तय ज फल क
 रि स्त्री सहित राजा सगर स्वर्ग लोक प्राप्त रूपो ॥ तीस्यो जल तादीय नै और को ए प्र
 कासे ॥ पर्वत को कह्यो स्वर्ग को साधन छै ॥ ये भय छो फिय पद्धत को कह्यो ॥ प्रमाण करे
 एवचन वसु कह्यो मोहिंसा नंद मृषा नंद रौ प्रध्वां न करि नरक युवां भी ॥ जव वस्तु
 का मुख धकी ॥ त्रैसा घोटा वचन निकस्यो ॥ तव आकास विधे ॥ त्रैसी ध्वनि ऊई मोने
 ब्रह्मंड फोहो ॥ अरया अत्र कस्मात् तवाणी ऊई ॥ अहो नारद अहो तापसा ॥ पृथ्वी पतिक
 मुख थकी ॥ असाधो अर्थ वचन निकस्यो ॥ तीस्यो नदी नगरी बहिवा लागी ॥ सेर
 वस्त्र कि गया ॥ सधिर की वर्षा ऊई ॥ स्त्र्य की किरणें मंद पनी ॥ सच्चिदिशा मलीन
 ऊई ॥ एती धिपरीति वात ऊई ॥ अरधरती फाटी ॥ सो वसुको सिंघासन न हू विगयो ॥

तो नैं यो सो षो छो ॥ ती सो ई की प्रतिपालणं तो नैं करि वौ जो गप्ये ॥ नारद को अर
ई को था के समीय वा द होय लौ ॥ सो जो ई को भंग रूचो तो यो जीवै को ई नही यावा
तवी क जाणौ ॥ अर ई कै था विनां ओर को ई को सरणै न ही ॥ एवच न बाह्यणी का
सुणि करि वसु कहतौ रूचौ ॥ हे मात रूतौ गुरु को सेव कछौ ॥ अर गु रु समान गु
रु का पुत्र नैं जाणौ छौ ॥ रूनी ति वां मछूं थे मो नैं का ई क हो छौ ॥ जिहि में ई की ज
हो सी ॥ सो ही करि स्यौ ॥ ये नय मति करौ ॥ ई मां ति का हि सं तो र्षी ॥ अब इ स रै दिन
विश्व भू त्या दिका सर्व वसु रा जा नैं वै सिं हा स न वै ठो देष ता रूवा ॥ विश्व भू ति प्र छ
नो रूचौ ॥ हे राज न थां का य ना सर्व हो राजा ॥ अ हिं सा ही धर्म विषे त त्प र रूवा ॥ राजा हि
म गिरि महा गिरि सम गिरि वसु गिरि ॥ एरा जा हरि वं सी आ गें रूवा ॥ ति हि वं स वि
षे विश्व वसु महा रा जा रूचौ ॥ ति हि का पुत्र थे रा जा वसु रूवा ॥ सो आ गे तो स र्व ही
रा जा ॥ अ हिं सा धर्म विषे प्र वर्णा ॥ अ व थे अ हिं सा धर्म की रूसा विषे का ई न प दे
वा द्यो ह छौ ॥ स त्प का प्र भा व थ की ग ग न में ति शो छौ ॥ सो थां की प्र भु ता स ग ले
ष्या त छौ ॥ सं दे ह का हरि करि वा नैं सम र्थ छौ ॥ जे में आ गि की क्रि एणी सो रू ई
पुंज नि ए मात्र मै प्र स हो या ॥ तो थां का वच न सं दे ह नैं हरि करे छौ ॥ ती सो हे प्र भो

रखांको कै ह्यौ छै॥ ज्ञानवांनो करि निंद्य छै॥ यागी कजो लो॥ ज्यौं जीव मै शस्त्र सौं घाति
 वाको पाप छै॥ तीस्यो अनेक गुणों पाप मंत्रादिकारि द्यात को जं लो॥ हिंसा मै कदाचि
 धर्म नही॥ अहो जे मूरिष हिंसा मै धर्म मां नै छै॥ ते अग्नि विषे कमल को वन उपजा
 यो चाहे छै॥ अरसूर्य का अस्तथ की दिवस मानै छै॥ अरसर्प का मुख थकी अमृत वा
 छै छै॥ अरकलह करि सुजस चाहे छै॥ अरकाल कूट जहर खाइ जीवो वांछे छै॥ सो
 कदाचि यो न होय॥ अहो जी कदाचि पाषाण जल विषे तिरे॥ सूर्य पश्चिम दि
 सामें ऊंगे॥ अग्नि मै शीत गुण होइ दृष्टवी तल उलटे॥ एता कार्य न के वा का छै सो
 नी होय नौ होय॥ यरंज जीव की धात सों कदाचि धर्म न होय॥ इत्यादि नारद
 जीव है त कथन कीयो॥ सो कहंत कलिषि जे॥ असानारद का वचन सुनि स
 र्वही सभा का लोग संजुष्ट हवा विष्वभूति कहि॥ जो वशुरा जा कहै सो प्रमाण
 ॥ तव नारद पर्वत ओर विष्वभूत्यादि कस सर्व ही स्वस्ति कावती नगरी नैं चात्पा
 सो के ता य कदि न मै जाय परूंचा॥ तव पर्वत पापी घरि जाइ सग लोह सांत मा
 ता नैं कह्यो॥ वाया पणी पुत्र सहित राजा वसुक नैं जाइ कहती ऊई हे पुत्र वशु
 यो पर्वत मंद बुद्धि अरमंद भाग्य छै॥ सो थारो गुरु जव तप लेवा लागो॥ तव ही॥

शोपितासीही। ह्मांको अरयांको गुप्त और को र्दगुरनही। सो यो नारद तो मो सो द
 धरा सै छै। अरव भी धेष करि कहै छै। सो र्दको कह्यो कां र्द होय छै। ह्मांरा पिता को ध
 र्म को नार्द स्तु विरनां मां जग में विष्णु मछै। तिहिं नी वेद को रहस्य यज्ञ धर्म विना
 यो छै। यज्ञ मृत्यु को फल स्वर्ग कह्यो छै। अरु मै भी र्द मारगे ने प्रगट कीयो। सो र्द को
 फल तै भी प्रत्यक्ष देख्यो ही। अरु अजहं भी तो ने प्रतीति न आनी तो सं प्रसन्न शास्त्र
 का पाएगा भी रा जाव मुने प्रछो। जो सत्य का ह्मां स करि आकां स विषै तिष्ठो रहै छै
 एवचन नार सुनि करि कहतौ हूँ। कां र्द दोष छै। वसु ही ने प्र छिज्यो। परं उ प्रथ
 म तो या विचारो। जे जीव वध सो धर्म छै। तो अहिं सा दान गरी लत पत्त मां इत्यादि
 शुभाचार धर्मी अथर्म होसी। अरु जे यो ही गहरी तो सकल मल छुपायी जी।
 वां ने परम गति होसी। सत्य गरी ल सं तो षट्पा का क्षरक पुरषां ने अर्ध भोग ति हो स
 । सो यो कदा चि न हो श। अरु जे कहै कि जज्ञ विषै जीव को घात धर्म छै। और
 को रपा पछै। सो पीमा तो जीव ने हति वां में सर्वत्र समां न छै। क्यो त फावत जां। ए
 वां में न आयो। ती स्यो जीव ने पीडा समां न छै। तो पाप भी समा न ही जां। एवो। अ
 रथे या कहै छै। पशु जीव भगवां न जज्ञ का हो मही ने निया जाया छै। सो आगाम मू

नहि रहै दया मुक्ति की सखी छै। कल्पंतरु की वेलि छै। सुख की दाता छै। नरक की घा-
ता छै। असावचन प्रवचिार्या कहा छै सो प्रमाण छै। तीस्रो हे विश्वभूति राजन-
पपकर्म को निबंधन। पुन्यधर्म को निकंदन। छील संतोषादि सत्कर्म को ना-
जना। असौ जो जज्ञ अधर्म हिंसा रूप सो तखो निअरजे ता पसदि गंवर छै त्या-
को न पद सो दया धर्म अंगीकार वनशि। एवचन नारद जी का विश्वभूति सुणि
करि कह तो हूवो। नो गारमें तो योधर्म साक्षात् सुर्ग सुख को साधन देषि अ-
गीर कीयो छै। क्यों करित जो। नारद कह ही हेतु पति त तो यं प्रति न छै। सत असत को
गपाता छै। काईयो कुकर्म को स्वर्ग को साधन छै। की ईरद स जो परिचार्य सहित स
गर को नां सवां छै छै। निहि पायीयो न पाय कीयो छै। मूर्खाने भ्रम को कारण माया
करी छै। तीस्रो तू स र्वथा प्रकार या प्रतीति छै। निअरद या न्त माशील संतोष
उपवाशादिका साधक पुरुषों को कह्यो। मारग छै। सो तो नें अंगीकार कर लो। अ-
सां अ नारद का विश्वभूति सुणि करि परवत नें कह तो हूवो। नो पद्वत नारद
भोति कहै छै। सो तें सु लो। तय पद्वत पायी अमुरे क कुशास्त्र करि मोहित हूवो
थ को डर बुद्धि कह तो हूवो। अहो राजन यो शास्त्र का ई नारद सु लो छै। म्हा

मर्माप्रभावस्योद्देनुममस्वर्गप्राप्तकृत्वा॥ सुखभोगवांछां एवचनमायाकृतमगरशुल
साकाविश्वभूतिमुल्लिखति॥ कश्चिदस्ति सत्यजोऽपि यज्ञश्च धर्मकोऽयमकीर्णो महाकालो
सुरयायी जीवजज्ञमैहोष्मांछासो मगरकाविश्वज्जतिकापितरादिकश्चाकामविषे
विमांशवैगघगटदिषायाते कटुताकृत्वा हे विश्वभूति पुंन्यवांन॥ ते महायज्ञकी
यो॥ याशप्रशादकरिहे मर्च्चनृप्रकृत्वा॥ सुर्गलोकका सुखपाया॥ अस्मावचनवांका
मुणि करि महाकाला सुरकी माया मे भूति मूरिष्य विश्वभूति ए सच्चिदात सत्यमांन
कृत्वा॥ हिंसाहीमैधर्ममांन्यो॥ अथानंतरयो सच्चिदांन नारद सुल्लो॥ जो पद्धत
पासो कुमारागको अधिकारी कृत्वा॥ हिंसा धर्मलोक मे प्रकास्यो॥ तदनारद विचार
॥ धिक्कार हो हय रयतनै॥ जिहिं पायी असौ विपरीत धर्म धायो॥ अवजिहि तिहि उपाय
करियो कुमाराग हरि करणो॥ नारद धरमात्मो असीम नमै धरि॥ अजोध्या आयो सो
श्वभूति सौ मिलि करि कटु तै कृत्वा॥ हे राजन जे पायी नर छै ते नी॥ अर्थ कै निमि
मकै अर्थि प्राण घातन करै को ईवीनी न काल मे धर्म कै निमित्त जीव वध करै छै॥ या
तै अजो एभी जौणो॥ हिंसाथ की धर्म कदाचि न होय॥ अहो परचन जो परब्रह्म
वांन को निस्त्यो वेद छै॥ तिहि विषे एक अहिंसा ही धर्म कह्यो छै॥ दया माता समां